10

पढ़ें कैसे

अपने छोटे भाई-बहनों को या दूसरे बच्चों को आपने प्रारंभिक पढ़ाई करते देखा होगा। कमल का फूल देखकर वे देवनागरी लिपि का 'क', खरगोश का चित्र देखकर वे 'ख' और इसी तरह से धीरे-धीरे पूरी वर्णमाला सीखते हैं। अक्षरों के बाद शब्द की बारी आती है। बच्चा वर्णों को जोड़-जोड़ कर पढ़ता है-'क-म-ल = कमल'। इसके बाद बच्चा पूरा वाक्य पढ़ने का अभ्यास करता है-''यह कमल का फूल है।'' अनुच्छेद, पाठ, कई पाठ, बाद में तो किताबों, पत्रिकाओं के कई पृष्ठ और उसके बाद पूरी किताब पढ़ जाते हैं। किंतु केवल साक्षर हो जाना या फिर शब्द या वाक्य या किताब के कई पन्ने पढ़ जाना ही पर्याप्त नहीं है। उन्हें समझना भी आना चाहिए।

किसी भी चीज़ को समझते हुए पढ़ना भी एक कौशल है। इसके कई चरण और स्तर हैं। इसे रोचक और बेहतर कैसे बनाया जा सकता है? इस पाठ में हम ये सभी कौशल सीखेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

पढ़ने के कौशल की जानकारी प्राप्त कर उनका प्रयोग कर सकेंगे;

- आस-पास बिखरी विविध प्रकार की उपलब्ध पठन सामग्री में से उपयोगी सामग्री का चयन कर उनका विश्लेषण कर सकेंगे;
- पठित और अपठित सामग्री में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- विविध प्रकार की पठित-अपठित सामग्री में से प्रमुख उपयोगी बिंदु, सार या केंद्रीय भाव निकाल कर प्रस्तुत कर सकेंगे;
- पठित सामग्री का विश्लेषण कर सकेंगे तथा उसका मूल्यांकन कर सकेंगे।

टिप्पणी

10.1 अक्षर से अनुच्छेद तक

अमेरिका में रहने वाला कोई बच्चा हिंदी पढ़ना सीख रहा है। उसकी पुस्तक में लिखा है-ई+ख=ईख और क+म+ल=कमल। अपनी माँ या किसी और की सहायता से वह बच्चा ई, ख, क, म, ल अक्षर पहचान लेता है। इसके बाद वह ईख और कमल को पढ़ लेता है। इन अक्षरों की पहचान के सहारे 'कम', 'कलम', 'कई', 'मकई'-जैसे शब्द भी पढ़ लेता है। क्या इसे हम कहेंगे कि बच्चे ने पढ़ना सीख लिया? हाँ, कम-से-कम इन शब्दों को पढ़ना तो उसे आता है। पढ़ने का पहला चरण है– भाषा के अक्षरों की पहचान तथा उनसे बने शब्दों की पहचान।

बालक ने अक्षर और उनसे बने शब्द तो पहचान लिए, किंतु कठिनाई तब होती है जब उसने अपने घर में इन शब्दों को कभी सुना न हो। अत: वह शब्दों को पढ़ तो लेता है, किंतु इनका अर्थ नहीं समझता। विद्यार्थी की मुश्किल आसान करने के लिए ही पुस्तक में लेखक इन शब्दों के साथ 'ईख' और 'कमल' का चित्र बना देता। अब ये दो शब्द विद्यार्थी के लिए केवल शब्द नहीं रहते। 'ईख' और 'कमल' का मूर्त रूप भी उसकी आँखों के सामने आ जाता है। वह जान जाता है कि कमल फूल का नाम है और ईख वही है जिसे 'गन्ना' कहते हैं। अब वह बालक चूँकि इन दो चीज़ों के रंग-रूप को पहचान गया है, इसलिए इन दोनों शब्दों के अर्थ भी उसकी समझ में आ गए। ये शब्द उसके लिए सार्थक हो गए।

अब आप जान गए हैं कि पढ़ने के कौशल का दूसरा चरण है **शब्दों के अर्थ जानना।** दूसरे चरण के बिना पहला चरण अधूरा है। पढ़ने का कौशल सीखने के लिए एक तीसरी बात और भी है, वह है– **पढ़ने की गति।** शब्द की पहचान और उसके अर्थ के ज्ञान के बाद हम एक बार में ही कई शब्दों के समूह को पहचान लेते हैं, पढ़ लेते हैं। यह पढ़ना थोड़ी तेज़ गति से होना चाहिए। अर्थ समझने के लिए उचित गति से पढ़ना ज़रूरी है। यदि आप बहुत धीरे-धीरे पढ़ते हैं, यदि आप एक-एक शब्द को रुक-रुक कर, अटक-अटक कर पढ़ रहे हैं तो पूरे अनुच्छेद का अर्थ आपकी पकड़ में नहीं आएगा। इसके लिए आपको शब्दों को पहचानने की शक्ति का विकास करना होगा। कई लोग बोल-बोलकर, होठों में बुदबुदाते हुए या होठ हिलाते हुए पढ़ते हैं। इससे भी पढ़ने की गति में बाधा पहुँचती है। अत: पढ़ते समय पाठ्य सामग्री का समुचित गति से मौन वाचन, मन-मन में अर्थ समझते हुए पढ़ने का अभ्यास कीजिए। आपको पढ़ने में आनंद आने लगेगा।

अब आप गति के साथ पढ़ लेते हैं, यह ठीक है, किंतु जो पढ़ते हैं क्या उसे समझते भी हैं? हाँ, आप समझ रहे हैं, यही कहा न आपने! यह समझना क्या होता है? पढ़कर समझने का मतलब क्या है? आइए, जानें। जैसे एक-एक शब्द को पहचानना काफ़ी नहीं होता। वाक्यांश और पूरे वाक्य समुचित गति से पहचानने होते हैं। वैसे ही पढ़कर समझने में शब्दों के प्रसंग के अनुसार अर्थ को समझना होता है। जो कुछ हम पढ़ रहे हैं, उसका अर्थ समझने के अतिरिक्त, उसमें कही गई बातें, घटनाएँ आदि का एक-दूसरे से संबंध समझना भी शामिल है। आप जानते हैं कि शब्दों से मिलकर वाक्यांश बनते हैं, वाक्यांशों से मिलकर

टिप्पणी

वाक्य बनते हैं, इन वाक्यों से मिलकर अनुच्छेद बनते हैं और कई अनुच्छेदों के मिलने से कोई भी रचना तैयार होती है-जैसे लेख, कहानी, समाचार आदि। पढ़ने का अभ्यास हो जाने पर आप एक-एक शब्द अलग-अलग नहीं पढ़ते। उसे एक ही प्रवाह में पढ़ते चले जाते हैं। किसी भी सूचना, संदेश, विचार, घटना, लेख, कहानी को पढ़ने के साथ-साथ आप उसका अर्थ भी समझते चलते हैं। पढ़ने की प्रक्रिया में सदा **समझना** शामिल रहता है। बिना समझे-बूझे पढ़ने का कोई मतलब नहीं होता। यह पढ़ने की प्रक्रिया का चौथा चरण है। अब आपने सचमुच पढ़ना सीख लिया।

पाठगत प्रश्न-10.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर सही (√) का निशान लगाइए :

1. पढ़ने का अभ्यास हो जाने पर हम-

   (क) एक-एक अक्षर अलग-अलग पढ़ते हैं ☐

   (ख) कई अक्षर एक साथ पढ़ते हैं ☐

   (ग) कई शब्द प्रवाह के साथ पढ़ते हैं ☐

   (घ) कई वाक्यांश एक साथ पढ़ते हैं ☐

2. असली पढ़ना कहलाता है, सामग्री में दिए गए-

   (क) शब्दों को समझना ☐

   (ख) अक्षरों को पहचानना ☐

   (ग) वाक्यांशों को पढ़ना ☐

   (घ) दिए गए विचार को समझना

3. पढ़ने के कौशल के इन चरणों को सही क्रम में लगाइए–

   (i) शब्दों के अर्थ जानना।

   (ii) कही गई बात पर विचार कर केंद्रीय भाव ग्रहण करना।

   (iii) अक्षरों तथा उनसे बने शब्दों को पहचानना।

   (iv) पाठ्य सामग्री को तीव्र गति से मन-ही-मन पढ़ना।

   (v) पढ़ने के साथ-साथ उसका अर्थ भी समझते चलना।

10.2 शब्द-ज्ञान से अर्थ-ज्ञान तक

आइए, पढ़ने के कौशल के संबंध में जो बातें हमने सीखीं उन पर और विचार करते हैं। अब आपको क्या लगता है, ठीक तरह से पढ़ने के लिए क्या शब्दों की पहचान ही काफ़ी है? नहीं। ऐसी पहचान निरर्थक होती है। हमें शब्दों के अर्थ भी आने चाहिए। इसी बात को

टिप्पणी

पढ़ें कैसे

ध्यान में रखते हुए आपकी सुविधा के लिए आपकी पाठ्य सामग्री के प्रत्येक पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ हाशिए पर दिए गए हैं। आप इनका लाभ अवश्य उठाइएगा। ये पाठ को समझने में सहायक सिद्ध होंगे। पाठ पढ़कर हमें उसका अर्थ भी तो समझना होता है। आइए उदाहरण रूप में एक अनुच्छेद पढ़ते हैं–

अनुच्छेद-1

आकाश में काले बादल छाए हुए थे। अचानक ही वे बादल छमाछम बरसने लगे। दरवाज़े पर घंटी बजी। आठ साल की रितु छमाछम करती हुई गई और उसने दरवाज़ा खोल दिया। उसका दस साल का भाई सुंदरेश सामने खड़ा था। वह अंदर आया। वह सिर से पाँव तक पूरी तरह से भीगा हुआ था। यह देखकर उसकी माँ एकदम से उस पर बरस पड़ीं।

इस अनुच्छेद में **'बादलों के संदर्भ'** में 'बरसना' शब्द का अर्थ है-आकाश से पानी का गिरना, **'माँ के संदर्भ'** में 'बरसना' शब्द का अर्थ है-उसका गुस्से से डाँट लगाना। इसी तरह से वर्षा के संदर्भ में 'छमाछम' का अर्थ है-बारिश की बूँदों के तेज़ी से गिरने से होने वाली आवाज़, जबकि ऋतु के संदर्भ में छमाछम उसके पैरों की पाजेब की आवाज़ है।

इस अनुच्छेद को पढ़कर आप निम्नलिखित घटनाएँ और तथ्य जान जाते हैं-

1. वर्षा अचानक होने लगी थी
2. सुंदरेश घर के बाहर था
3. वह वर्षा में भीग गया
4. वह घर आया
5. उसे खूब डाँट पड़ी

उक्त अनुच्छेद को पढ़ते समय आपने और भी कई बातें जानी होंगी, जो इस अनुच्छेद में कही नहीं गई हैं, जैसे– यह घटना बरसात के मौसम की है। वर्षा बहुत तेज़ थी। सुंदरेश को घर के बाहर खेलने की आदत है। सुंदरेश काफ़ी खेलने वाला लड़का है। जिस समय वर्षा आरंभ हुई, घर का दरवाज़ा भीतर से बंद था। सुंदरेश की माँ को उसके स्वास्थ्य की बहुत चिंता रहती है।

आप इन तथ्यों और घटनाओं से नीचे लिखे पारस्परिक तथा कार्य-कारण संबंध भी जान जाते हैं–

1. जिस समय वर्षा आई, सुंदरेश घर के बाहर था।
2. वह घर लौटा। वर्षा बहुत तेज़ थी, इसलिए वह पूरी तरह भीग गया था।
3. माँ बहुत नाराज़ हुईं, क्योंकि वह पूरी तरह से भीगा हुआ था और माँ को चिंता हुई कि कहीं वह बीमार न पड़ जाए।

टिप्पणी

इस तरह से शब्दों का प्रसंग के अनुकूल अर्थ समझना और पठन-सामग्री में निहित तथ्यों-घटनाओं आदि का पूर्वापर तथा पारस्परिक संबंध समझना पढ़ने के कौशल के लिए ज़रूरी है।

इस तरह से पढ़ने के बाद आपने कुछ निष्कर्ष निकाले होंगे, है न? आपने सुंदरेश की आदत और उसकी माँ के स्वभाव का मूल्यांकन किया। संभव है, यह सब कुछ पढ़ते हुए आपको इसी प्रकार का कोई व्यक्तिगत अनुभव याद आया हो, जिससे सुंदरेश की स्थिति पर आप हँस पड़े हों और पूरी घटना को पढ़कर आपने आनंद लिया हो। यह एकदम स्वाभाविक है कि आप जो कुछ पढ़ते हैं, समझते हैं उसका अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर मूल्यांकन करते हैं, उससे निष्कर्ष निकालते हैं और उसका आनंद उठाते हैं। यह निष्कर्ष, यह मूल्यांकन, यह आनंद उठाना, पढ़ने और पढ़े हुए अंश का अर्थ समझने की प्रक्रिया का पाँचवाँ और अंतिम चरण है। इस क्रम में आप उन बातों को भी समझ लेते हैं, जो रचना में साफ़-साफ़ नहीं कही गई हैं, किंतु उनमें छिपी हुई हैं, निहित हैं।

शब्दार्थ

विवेचना = लिखी हुई बातों पर खूब सोच-विचार
मौन-वाचन = चुप रहकर पढ़ना, मन ही मन में पढ़ना,

इसका अर्थ यह हुआ कि ठीक से और पूरी तरह से पढ़ना तभी होगा जब आप पढ़ी हुई सामग्री में कही गई बातों, विचारों या भावनाओं और घटनाओं की विवेचना करके उनका आनंद लेंगे। उन बातों को अपने मन में बिठा लेंगे, अपने ज्ञान और अनुभव का हिस्सा बना लेंगे। आइए, पढ़ने के पाँचों अंगों को फिर से समझ लें–

पारस्परिक = एक दूसरे से संबंधित
कार्य-कारण संबंध = कोई काम किस कारण से हुआ यह संबंध

- शब्दों और उनसे बने वाक्यांशों को पहचानना;
- शब्दों के अर्थ जानना;
- तीव्र गति से पाठ्य सामग्री का मौन वाचन करना;
- पठित सामग्री में दिए गए तथ्यों, घटनाओं, विचारों आदि को जानना;
- पठित सामग्री में दिए गए तथ्यों, घटनाओं, विचारों आदि का पारस्परिक संबंध समझना, उनका मूल्यांकन करना तथा निष्कर्ष निकालना।

अब हम यह मान लेते हैं कि पढ़ने के कौशल के पाँचों अंग आपको याद हो गए? ठीक है न! तो अब यह देखें कि पठन-कौशल के इन चरणों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए।

इस संबंध में एक बात और। आप और हम ढेर सारी पुस्तकें पढ़ते हैं। हम समाचार-पत्र पढ़ते हैं, कहानी, व्यंग्य, वैचारिक लेख पढ़ते हैं और कविताएँ भी पढ़ते हैं। इन सबकी भाषा तो हिंदी ही होती है, किंतु शब्दों के अर्थ विभिन्न संदर्भों के अनुसार होते हैं, उनके प्रयोग भिन्न होते हैं, उनकी शैली भिन्न होती है और उन्हें सही प्रकार से पढ़ने-समझने के लिए विभिन्न स्तर के पठन-कौशल की आवश्यकता होती है। विभिन्न प्रकार और विभिन्न स्तर की अधिक-से-अधिक सामग्री को पढ़ने-समझने योग्य बनाने के लिए पढ़ने का अभ्यास होना चाहिए। इस अभ्यास के लिए ही विभिन्न प्रकार की सामग्री इस पुस्तक में आप पढ़ेंगे–कहानियाँ, कविताएँ, दोहे, लेख, व्यंग्य आदि। यहाँ तरह-तरह की सामग्री देने का

उद्देश्य आपको पठन-कौशल में सक्षम बनाना है, जिससे आप भावी जीवन में जो कुछ पढ़ें, उसे बिना किसी सहायता के पढ़ सकें।

पाठगत प्रश्न-10.2

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. सामग्री पढ़ते समय निम्नलिखित में से क्या आवश्यक नहीं है–

   (क) शब्दों से नए शब्द बनाना

   (ख) निष्कर्ष निकालना

   (ग) तथ्यों-घटनाओं का आपसी संबंध पहचानना

   (घ) वाक्यांशों को एक साथ पहचानना

2. निम्नलिखित कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए कथनों के सामने सही (√) और गलत (X) का निशान लगाइए।

   दोपहर का खाना खाकर किसान ने अपने बर्तन धोए। वहाँ एक अजनबी घुड़सवार आया। वह उसके गाँव की ओर जा रहा था। उसने सोचा क्यों न ये बर्तन इस घुड़सवार के हाथों घर भेज दूँ। मुझे इन्हें ढोना नहीं पड़ेगा। उसने घुड़सवार से निवेदन किया, ''आप मेरे गाँव से गुज़र रहे हैं। क्यों न आप ही ये बर्तन मेरे घर छोड़ दें।'' घुड़सवार ने मना कर दिया। कहा–''मेरे पास घर ढूँढ़ने का समय नहीं है।'' और आगे बढ़ गया। आधे मील की दूरी पर पहुँचकर वह सोचने लगा–'गलती हो गई, मुझे तो मुफ़्त में ही बर्तन मिल रहे थे। न मैं उसे जानता हूँ न वह मुझे। बर्तन अपने घर तो ले ही जा सकता हूँ।' यह सोच कर वह वापस आया और किसान से बोला, ''क्या फ़र्क पड़ता है, आपके गाँव से गुज़र तो रहा ही हूँ। आप मुझे बर्तन दे दीजिए।''

   किसान ने मुसकुराते हुए कहा, ''जो तुमने सोचा वही मैंने भी सोचा।''

   (क) एक किसान ने भोजन शाम को खाया था। ☐

   (ख) घुड़सवार से उसकी अच्छी जान पहचान थी। ☐

   (ग) किसान बर्तन अपने घर भिजवाना चाहता था। ☐

   (घ) घुड़सवार ने पहले मना कर दिया, क्योंकि वह किसान के घर का पता नहीं जानता था। ☐

   (ङ) आधे रास्ते पहुँचकर घुड़सवार ने सोचा कि सेवा करने में कोई हर्ज़ नहीं है, पता ढूँढ़ा जा सकता है। ☐

   (च) घुड़सवार कुछ सोचकर अपने घर चला गया। ☐

टिप्पणी

(छ) किसान ने बर्तन अंततः घुड़सवार को दे दिए। ☐

(ज) किसान ने सोचा ऐसे अनजाने व्यक्ति को बर्तन नहीं देने चाहिए। ☐

10.3 अर्थज्ञान से पढ़ने की कुशलता तक

आइए, पढ़ने की कुशलता पर कुछ और बातें करें।

इस पुस्तक के पाठों में आए अधिकांश शब्दों से आप परिचित होंगे। बहुत सारे शब्द तो आपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में अपने आस-पास सुने होंगे। आपने अन्य विषयों की बहुत-सी पुस्तकें तथा इससे पहले भी हिंदी की पुस्तकें पढ़ी होंगी। फिर भी प्रत्येक पाठ में कुछ शब्द ऐसे आ जाते हैं, जो हमारे लिए अपरिचित होते हैं। किंतु प्रसंग के अनुसार उनके अर्थ का अनुमान लगाया जा सकता है और जाना जा सकता है कि लेखक क्या कहना चाहता है। जब ऐसे शब्द विभिन्न संदर्भों में बार-बार आते हैं तो हम उनका अर्थ निश्चित रूप से जान जाते हैं। फिर भी यदि कोई अस्पष्टता रह जाए तो ऐसे शब्दों के अर्थ शब्दकोश में देखकर अपने अनुमान को पक्का कर लेना चाहिए।

पाठ्य-सामग्री में तीसरे प्रकार के वे शब्द होते हैं, जो बिल्कुल ही अपरिचित होते हैं और संदर्भ के आधार पर भी उनका अर्थ समझना कठिन हो जाता है। दो उदाहरण देखिए-

*'कारगिल युद्ध की **विभीषिका**[1] **वर्णनातीत**[2] है। इस घटना की **विश्वव्यापी**[3] स्तर पर निन्दा हुई।'*

उपर्युक्त तीन शब्दों में से दूसरे और तीसरे शब्द का अर्थ प्रसंग के अनुसार जानना ही संभव होगा, किंतु पहले शब्द के लिए शब्दकोश देखना आवश्यक हो जाएगा। शब्दों के अर्थ जानने के संबंध में एक बात याद रखिए। शब्द से अधिक महत्त्वपूर्ण अनुच्छेद या लेख में कही जा रही बात का मुख्य भाव है। लेखक के भाव, विचार, संदेश आदि समझना ही वास्तविक रूप से पढ़ना है। भाव, विचार आदि शब्दों द्वारा ही प्रकट होते हैं, अतः अधिक-से-अधिक शब्दों को उनके सही अर्थों सहित जानना, 'पढ़ना' कौशल पर अधिकार पाने के लिए आवश्यक है।

आप जान चुके हैं, पढ़कर समझने की पहली शर्त है– गतिपूर्वक पढ़ना। जब तक समुचित गति से नहीं पढ़ा जाएगा, तब तक तथ्यों, विचारों, भावों आदि के आपसी संबंधों को अच्छी तरह से समझने में कठिनाई होगी। अतः सबसे पहले गति से पढ़ने का अभ्यास कीजिए। गतिपूर्वक पढ़ने के लिए शब्दों को अलग-अलग देखना आवश्यक नहीं है। हम एक ही नज़र में पूरा वाक्य अथवा वाक्यांश पढ़ लेते हैं। पठन की गति बढ़ाने का अभ्यास करने का एक तरीका है कि पठन सामग्री की दाहिनी ओर पृष्ठ पर सबसे ऊपर अँगुली रखकर, धीरे-धीरे आगे की ओर बढ़ाते चलिए और अंगुली के फिसलने की गति से ही पंक्तियों को पढ़ने का प्रयत्न कीजिए। अभ्यास करने पर आपकी पठन गति अवश्य बढ़ेगी। इसके लिए आप घड़ी रखकर देखिए कि एक मिनट में आप कितने शब्द पढ़ पाते

टिप्पणी

हैं। आप पाएँगे कि कुछ दिन अभ्यास के बाद आप कम समय में अधिक शब्द पढ़ लेते हैं। निरंतर अभ्यास करते रहने पर अपनी पढ़ने की गति में सुधार कर सकते हैं। एक बात का अवश्य ध्यान रखिए–यदि सामग्री में नए अथवा कठिन शब्द आएँ तो उनका प्रसंगानुकूल अर्थ समझने का प्रयत्न कीजिए और उन्हें अपने पठन में बाधक न बनने दें। किंतु यदि ऐसे शब्द संख्या में काफी हैं और उनसे अर्थ-बोध में बाधा पड़ रही है, तो उन्हें अलग किसी कागज़ पर लिखते चलिए। पूरा पाठ पढ़ लेने के बाद इन शब्दों को शब्दकोश में देखिए और प्रत्येक के सामने उसका अर्थ लिख लीजिए। अब आप पाठ दुबारा पढ़ जाइए। तब तक पढ़िए जब तक स्पष्ट न हो जाए।

शब्दों के अर्थ जान लेने के पश्चात्, अनुच्छेद में प्रकट विचारों और तथ्यों को समझना अधिक कठिन नहीं होगा। किसी अनुच्छेद को पढ़ते समय आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर ढूँढने का प्रयास कीजिए–

1. अनुच्छेद में कौन-कौन से तथ्य दिए गए हैं?
2. अनुच्छेद में कौन-कौन से विचार आए हैं?
3. इनमें से कौन-से तथ्य तथा विचार मुख्य हैं?
4. इस अनुच्छेद में कही गई बातें कहाँ तक सही हैं, इत्यादि।

जब तक आप ऐसे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाएँगे, समझिए आपने अनुच्छेद का अर्थबोध नहीं किया, अर्थात् आपका पढ़ना, न पढ़ना समान ही रहा।

पढ़ी हुई सामग्री को पूरी तरह समझने के लिए ज़रूरी है कि जो बात कही गई है, उसका मनन करें अर्थात् उस पर मन ही मन सोच-विचार करें। कोई घटना क्यों घटी, अमुक पात्र का स्वभाव कैसा था, लेखक का संदेश क्या था, उसने वह संदेश कितनी अच्छी तरह से दिया है, जो बात कही गई है, वह कहाँ तक सही है, इत्यादि। इस प्रकार सोचने-विचारने से पढ़ी-समझी बात आपके ज्ञान और अनुभव का अंग बन जाएगी। तब आपको कुछ रटने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। पढ़ी-समझी बातें जीवन में आपके काम आएँगी और नई सामग्री को पढ़ने-समझने में सहायता प्रदान करेंगी।

हाँ, एक बात और यह भी जानने की कोशिश भी कीजिए कि सही उत्तर वही क्यों है? यदि यह सब कुछ आप सफलतापूर्वक कर पाएँगे तो आप सच्चे अर्थों में पढ़ना जान जाएँगे। पर एक बात याद रखिए, किसी एक अनुच्छेद, लेख अथवा कहानी को पढ़ और समझ लेने पर यह नहीं मान लेना चाहिए कि आप पढ़ने में पूर्णतया कुशल हो गए हैं। जैसा कि हम पहले बता चुके हैं कि पठन सामग्री भिन्न-भिन्न विषयों और स्तरों की होती है, अत: अपनी आवश्यकता और रुचि की सामग्री को पढ़ने और समझने के लिए आवश्यक है कि आप विभिन्न प्रकार की सामग्री को पढ़कर समझने का अभ्यास करें। पढ़ने में गति भी अभ्यास से ही आती है और अर्थबोध का विकास भी विभिन्न प्रकार की सामग्री को बार-बार पढ़ने से ही होता है।